नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

मजबूत कृषि नीति की जरूरत

देश इस वर्ष कमजोर मानसून की चुनौती का सामना कर रहा है. जून में सामान्य से 43 प्रतिशत कम वर्षा दर्ज की गई, जो पिछले सौ वर्षों के सबसे शुष्क जून महीनों में शामिल है. जुलाई के शुरुआती दिनों में हुई अच्छी बारिश से स्थिति में कुछ सुधार अवश्य हुआ है, लेकिन मौसम विभाग का अनुमान अब भी सामान्य से कम वर्षा का संकेत देता है. ऐसे में यह स्पष्ट है कि केवल अच्छी बारिश की उम्मीद के भरोसे कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नहीं छोड़ा जा सकता. सरकार को दीर्घकालिक और व्यावहारिक कृषि नीति के साथ त्वरित राहत उपायों पर भी समान रूप से ध्यान देना होगा.

भारत की कृषि आज भी बड़े पैमाने पर मानसून पर निर्भर है. देश की लगभग आधी कृषि भूमि ही सिंचित है, जबकि शेष क्षेत्र वर्षा आधारित खेती पर आश्रित है. ऐसे क्षेत्रों में वर्षा की कमी केवल फसल उत्पादन को प्रभावित नहीं करती, बल्कि किसानों की आय, ग्रामीण रोजगार और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर भी गहरा असर डालती है. बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, झारखंड, मराठवाड़ा तथा उत्तर-पश्चिम भारत जैसे क्षेत्रों में वर्षा की भारी कमी चिंता का विषय है. इन इलाकों में पहले से ही कृषि उत्पादकता कम और गरीबी अधिक है. कमजोर मानसून इन समस्याओं को और गंभीर बना सकता है.

इस वर्ष खरीफ फसलों की बुआई में भी उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई है. धान, दलहन, तिलहन और कपास जैसी प्रमुख फसलों का रकबा पिछले वर्ष की तुलना में काफी कम है. यदि आगामी दिनों में वर्षा की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ तो कृषि उत्पादन घटने की आशंका बढ़ जाएगी. इसका सीधा असर खाद्य महंगाई पर पड़ेगा. हालांकि देश में खाद्यान्न का पर्याप्त भंडार उपलब्ध है, लेकिन दालों और तिलहनों के मामले में भारत पहले से ही आयात पर निर्भर है. उत्पादन में कमी से आयात बढ़ेगा और वैश्विक बाजार की कीमतों का दबाव भी घरेलू उपभोक्ताओं पर पड़ेगा.

चिंता का दूसरा बड़ा कारण जल संसाधनों पर बढ़ता दबाव है. जलाशयों में जल स्तर घट रहा है और कई राज्यों में भूजल तेजी से नीचे जा रहा है. जलवायु परिवर्तन के इस दौर में केवल मानसून आधारित कृषि भविष्य का समाधान नहीं हो सकती. सूक्ष्म सिंचाई, जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन और फसल विविधीकरण को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाना होगा. साथ ही कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली फसलों और उन्नत बीजों को बढ़ावा देना समय की मांग है.

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाए रखना भी उतना ही आवश्यक है. खेती के अलावा ग्रामीण परिवारों की आय का बड़ा हिस्सा गैर-कृषि गतिविधियों से आता है. इसलिए ग्रामीण रोजगार सृजन, लघु उद्योगों और आजीविका कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से लागू करना होगा. रोजगार गारंटी योजनाओं को पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराकर उनका दायरा बढ़ाया जाना चाहिए, ताकि कमजोर मानसून का असर ग्रामीण आय पर कम से कम पड़े. खाद्य सुरक्षा योजनाओं को भी पूरी संवेदनशीलता के साथ लागू करना आवश्यक है.

कमजोर मानसून केवल मौसम की चुनौती नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक परीक्षा भी है. यदि समय रहते सिंचाई, जल प्रबंधन, कृषि सुधार, ग्रामीण रोजगार और खाद्य सुरक्षा पर समन्वित नीति अपनाई जाए तो इस संकट को अवसर में बदला जा सकता है. कृषि को केवल बारिश के भरोसे छोड़ने का समय अब बीत चुका है. देश को बदलती जलवायु के अनुरूप अधिक टिकाऊ, आधुनिक और किसान-केंद्रित कृषि व्यवस्था विकसित करनी ही होगी.

जगन्नाथ दर्शन की स्मृति मेरे मन से मिटी नहीं

द्रौपदी मुर्मु

बचपन से मुझे श्रीजगन्नाथ जी की अनेक प्रार्थनाएँ और भजन याद हैं. स्कूल और कॉलेज में पढ़ते समय मैं गीत गाया करती थी. जगन्नाथ जी का भजन गाकर मैं खुश होती थी. महाप्रभु को अपने निकट पाती थी. अब गीत नहीं गाती. किंतु साँझ-सबेरे महाप्रभु का स्मरण करके उनके भजन गुनगुना लेती हूँ. मुझे लगता है कि महाप्रभु हर वक़्त मेरे आस-पास ही रहते हैं. विपदा-आपदा में मेरी मदद करते हैं. भक्तकवि मधुसूदन राव का गीत आज भी मैं मन ही मन गाती हूँ:

'मेरे पास दिन-रात रहते हैं महाप्रभु परमेश्वर,
यह बात याद कर हृदय में पूजूँगा उन्हें निरंतर.'

मैं कुछ समझने-बूझने की उम्र में पहुंचने तक जगन्नाथ जी को जानने लगी थी. हमारे घर मेंअक्सर जगन्नाथ जी की चर्चा होती थी. गाँव के हर टोले में उनकी महिमा का बखान होता था.जब मैं गाँव के स्कूल में पढ़ती थी, भक्त सालबेग की 'आहे नीड़ो शोइड़ो' प्रार्थना गाई जाती थी.

स्कूल के शिक्षक जगन्नाथजी के बारे में तरह-तरह की बातें कहा करते थे. पुरी में बड़ा मंदिर है, इतना बड़ा मंदिर और कहीं नहीं है !मंदिर में श्रीजगन्नाथ जी अपनी बहन सुभद्रा और बड़े भाई बलभद्र के साथ पूजे जाते हैं. जगन्नाथ जी का रंग काला है, उनकी आँखें गोल-गोल हैं. सुभद्रा जी का रंग पीला है, बलभद्र है चाँदनी फूल की तरह सफेद.वह छविएक बार देख लेने के बाद फिर भुलाए नहीं भूलती. सर यह भी कहते थे, जगन्नाथ हैं 'महाप्रभु', उनका प्रसाद 'महाप्रसाद' है, उनका मंदिर 'बड़ा मंदिर' है, उनका पथ 'विशाल पथ' (बोड़ो दांडो) है, और उनका समुद्र 'महोदधि' है. मयूरभंज के उपरबेड़ा गाँव से पुरुषोत्तम क्षेत्र पुरी की दूरी बहुत थी ! भला देखने का अवसर मुझे कहाँ मिलता.किंतु मैं भुवनेश्वर गई और मैंने यूनिट-2 के गर्ल्स हाईस्कूल में नाम लिखवाया. हॉस्टल में रहने लगी. उसके बाद मैंने पुरी, भुवनेश्वर और कोणार्क देखा.

पहली बार जगन्नाथ दर्शन की स्मृति मेरे मन से मिटी नहीं है. बहुत बड़ा मंदिर, बड़े-बड़े देवता ! भला ये सब भुलाए जा सकते हैं क्या भुलाई जा सकती है उनकी रथयात्रा? बारह महीने में तेरह पर्व-त्योहार मनाए जाते हैं श्रीक्षेत्र में. लेकिन रथयात्रा की छटा तो निरालीहोती है. पूरे वर्ष भक्तगण यहाँ आकर महाप्रभु का दर्शन करते हैं मंदिर के अंदर जाकर. किंतु वर्ष में एक बार महाप्रभु अपने भव्य मंदिर से बाहर 'विशाल पथ' (बोड़ो दांडो) पर आते हैं. भक्तों को दर्शन देते हैं. तीन रथ पर तीन ठाकुर बैठकर चक्रराज सुदर्शन के साथ गुंडिचा मंदिर की ओर यात्रा करते हैं. वहाँ सात दिनों तक रहकर वापस लौट आते हैं. महाप्रभु का यह महापर्व अतुलनीय है बचपन से मैं जगन्नाथ जी की भक्त हूँ. वे सर्वदा मेरे परम आराध्य हैं. मेरे जीवन के उत्थान और पतन के वे नियंता हैं. मेरे दुख-सुख के कर्ता-धर्ता हैं. जीवन में मैंने बहुत कष्ट भी सहे हैं. उन सब दारुण दुखों से उबारा है मुझे महाबाहु ने. मैं उनकी बेटी जो हूँ!

राष्ट्रपति पद के लिए मुझे उम्मीदवार बनाने की घोषणा होते ही मैंने महाप्रभु का स्मरण किया. इतनी ऊँचाई पर मुझे ले जा रहे हो प्रभु, पग-पग पर मुझे सहारा देना, सदा मेरे पास रहना - यह मेरी प्रार्थना थी. उन्होंने मेरी प्रार्थना सुनी, सुन भी रहे हैं. राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार के रूप में दिल्ली में रहने के दौरान रथयात्रा का महापर्व आया. परंतु पुरी जाना संभव नहीं था. रथयात्रा के दिन बड़े भोर मेंदिल्ली के हौजखास मेंबनेजगन्नाथ मंदिर जाकर मैंने महाप्रभु के दर्शन किए.आनंद से भर गया मन. उनका आशीष मुझ पर बरस गया. बड़े आत्मविश्वास से मैंने अपना नामांकन-पत्र दाखिल किया.अत्यंत उत्साह से चुनाव कैंपेन में भाग लिया. 25 जुलाई, 2022 को पार्लियामेंट के सेंट्रल हॉल में शपथ लेने जाते समय मैं जगन्नाथ जी से प्रार्थना करते-करते जा रही थी. उनके आशीर्वाद से मेरा शपथ-पाठ खूब अच्छी तरह संपन्न हुआ. राष्ट्रपति के रूप में मेरे प्रथम भाषण के समय मानो वे मेरे साथ ही थे. पुरी जाकर महाप्रभु के दर्शन केलिए मेरा मन व्याकुल हो उठा. दिन बीतते चले गए, लेकिन मैं पुरी नहीं जा सकी. मुझे लगा कि बिना उनके बुलावे के कोई कैसे उनके पास जा सकता है ! मैंने मन ही मन उनसे कहा, मेरा कोई दोष हो तो क्षमा करो प्रभु, मुझे पुरी बुलाओ, दर्शन दो. वे 'भाव' के ठाकुर हैं. मेरा 'भाव' कैसे नहीं समझते? कुछ ही दिनों में पुरी जाने का कार्यक्रम तय हो गया. उस दिन 10 नवंबर, 2022 था. पुरी में अवतरण करने के बाद कार-केड चल पड़ा श्रीमंदिर की ओर. कार-केड पुरी के प्रशस्त पावन-पथ पर पहुँचते ही मेरे अंदर एक अपूर्व भावना का संचार हुआ. यह विशाल-पथ महाप्रभु जगन्नाथ का ही है. यहाँ क्या आवश्यकता है प्रोटोकॉल की? पुरी तो क्षेत्रराज के रूप में प्रसिद्ध है. महाप्रभु देवाधिदेव हैं. और अधिक कुछ सोचने से पहले मैंने गाड़ीरुकवाई. मेरी गाड़ी रुकने पर पीछे आ रही सारी गाड़ियाँ रुक गईं. किसी के कुछ समझने से पहले मैंने पावन-पथ पर नंगे पैर चलना शुरू कर दिया. श्रीमंदिर लगभग दो किलोमीटर दूर था. मंदिर के नीलचक्र और पतित पावन-ध्वज को देखतेहुए मैं आगे बढ़ती चली गई. पथ के दोनों किनारों पर खड़े बच्चों, महिलाओं, युवा-छात्रों और बुजुर्गों को नमस्कार भी करती जा रही थी. मेरा ध्यान था जगन्नाथ जी के पास. श्रीमंदिर के सिंहद्वार के पास पहुंचते ही मैं स्थिर नहीं रह पाई.

(लेखिका देश की राष्ट्रपति हैं)

ग्वालियर चंबल डायरी

अब अवधेश नायक के बिना चुनाव लड़ने की तैयारी में जुटी कांग्रेस

हरीश दुबे

निवर्तमान विधायक राजेन्द्र भारती के परिवार द्वारा उपचुनाव में टिकट की स्पर्धा में अपनी दावेदारी पीछे खींच लेने के बाद कांग्रेस में अवधेश नायक ही टिकट के मजबूत दावेदार के रुप में उभरे थे, वजह यह कि टिकट के दूसरे प्रमुख दावेदार माने जा रहे घनश्याम सिंह ने अपनी पारंपरिक सीट सेंवढ़ा छोड़कर दतिया लौटने के प्रति अनिच्छा जताई थी. इसके बाद अवधेश नायक टिकट के प्रति इतने आश्वस्त हो गए कि उन्होंने नामांकन पत्र भी खरीद लिया था लेकिन पार्टी ने भरोसा किया राजपरिवार से जुड़े घनश्याम सिंह पर. अवधेश नायक कोपभवन में चले गए हैं. दतिया विधानसभा क्षेत्र में लगभग 33,000 ब्राह्मण मतदाता हैं, जिन पर नायक का सीधा प्रभाव माना जाता है, लिहाजा अपने प्रमुख ब्राह्मण नेता के नाराज होने के बाद कांग्रेस के चुनाव प्रबंधकों की चिंताएं बढ़ गई हैं.

उन्हें मनाने के लिए कांग्रेस के बड़े नेता रोजाना उनके घर पर दस्तक दे रहे हैं लेकिन भाजपा में वापस लौटने की अटकलों के बीच अवधेश ने असमंजस की स्थिति बनाए रखते हुए अभी तक पत्ते नहीं खोले हैं. हाल ही में कांग्रेस से उनकी कुछ नाराजगी की खबरों के बीच, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता उन्हें मनाने में जुटे हैं. जीतू पटवारी उनके घर जाकर खाना खा आए हैं तो दिग्विजय ने पिछली बार उनका टिकट कटने में अपनी भूमिका कबूल करते हुए भरी सभा में उनसे माफी मांगी है. गौरतलब है कि डॉ. नरोत्तम मिश्रा से मतभेदों के चलते उन्होंने 23 के विधानसभा चुनाव से ठीक पहले कमलनाथ के कहने पर भाजपा का साथ छोड़कर कांग्रेस का दामन थाम लिया था.

कांग्रेस ने शुरुआती सूची में उन्हें दतिया से उम्मीदवार घोषित भी किया लेकिन बाद में स्थानीय विरोध के चलते उनका टिकट बदलकर राजेंद्र भारती को दे दिया गया था, तब उन्हें अगले चुनाव का भरोसा दिया गया था, यह भरोसा पूरा नहीं हुआ और अब उनके भाजपा में लौटने की अटकलें लग रही हैं.

दरअसल, अवधेश नायक दतिया में कद्दावर राजनीतिज्ञ और प्रमुख ब्राह्मण चेहरा की तो छवि रखते ही हैं. पार्षद का चुनाव जीतकर अपना राजनीतिक सफ़र शुरू करने वाले नायक की छवि कांग्रेस में शामिल होने के पहले तक कट्टर संघनिष्ठ की रही है. दतिया क्षेत्र के स्थानीय राजनीतिक और चुनावी समीकरणों में उनका करीब पिछले दो दशकों से गहरा प्रभाव माना जाता रहा है. वे सियासत के समर में रिस्क मोल लेते रहे हैं, मसलन 2008 के आसपास जब उमा भारती ने भाजपा से अलग होकर 'भारतीय जन शक्ति पार्टी' बनाई, तब नायक भी उनके साथ चले गए और दतिया से चुनाव लड़ा था. बाद में वह फिर से भाजपा में लौट आए. शिवराज ने उन्हें पाठ्यपुस्तक निगम का उपाध्यक्ष बनाकर राज्यमंत्री का दर्जा दिया लेकिन वे उनका साथ छोड़कर कांग्रेस में चले आए. अब लगता है कि वे फिर से सरप्राइज देने के मूड में हैं. वे कांग्रेस से टूटते हैं तो पार्टी के चुनाव प्रबंधन के लिए बड़ा झटका होगा. कांग्रेस ने कई कनिष्ठ नेताओं को तो इस बार स्टार प्रचारक बनाया है लेकिन नायक को नहीं, प्रतीत होता है कि कांग्रेस भी उनके बगैर उपचुनाव लड़ने के लिए खुद को ढालने में जुट गई है.

अब जातिगत समीकरणों पर केंद्रित हुआ चेंबर चुनाव

चेंबर चुनाव में इस बार जीत - हार की संभावनाओं का आंकलन अभी तलक राजनीतिक समीकरणों के आधार पर ही किया जा रहा था लेकिन अब जातिगत समीकरण उभार पर हैं. चेंबर की मतदाता सूची में अग्रवाल समाज का एकाधिकारिक वर्चस्व है, लिहाजा तमाम प्रत्याशियों ने अपनी राह आसान करने के लिए अब खुलकर अग्रवालवाद का परचम लहरा दिया है. इससे सर्वाधिक असुविधा जैन, सिंधी एवं अन्य समुदायों से ताल्लुक रखने वाले प्रत्याशियों को हुई है. चेंबर चुनाव कार्यालय ने मतपत्र पर प्रत्याशियों के उपनाम न छापे जाने की गाइडलाइन बनाई थी, इसका तीखा विरोध हुआ. ताजा हालात यह हैं कि ग्वालियर चंबल अंचल के व्यापारियों एवं उद्यमियों के इस सबसे बड़े संगठन के इंतखाब में व्यापारियों की समस्याएं, मांगें और कारोबार की तरक्की से जुड़े मसले गौण हो गए हैं और इनकी जगह 'अग्रवालवाद' (जातिगत समीकरण) और राजनीतिक गुटबाजी सबसे बड़े चुनावी मुद्दे बनकर उभरे हैं. चुनाव में व्यापारियों के मूल मुद्दों से ज्यादा जातीय एकजुटता और राजनीतिक दिग्गजों का वर्चस्व चर्चा का केंद्र बना हुआ है. कुल मतदाताओं में अग्रवाल समाज का एक बड़ा निर्णायक हिस्सा है. निवर्तमान अध्यक्ष डॉ. प्रवीण अग्रवाल इस बार व्हाइट हाउस से अलग होकर निर्दलीय रूप में अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ रहे हैं. वे अपने समाज और समर्थकों के दम पर चुनाव को अपने हक में बदलने की कोशिश में हैं. सिर्फ अध्यक्ष ही नहीं, बल्कि उपाध्यक्ष, सचिव पद पर भी बड़े अग्रवाल चेहरे चुनावी मैदान में डटे हैं.

मतदाता सूची पुनरीक्षण को लेकर चिंता

देश के 10 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के दौरान बड़ी तादाद में नाम हटाए गए. इस वजह से कितने ही मतदाता वोट डालने से वंचित रह गए. बंगाल व असम में तो जिन लोगों का नाम मतदाता सूची से निकाल दिया गया, उन्हें राशन तथा जनहित में चलाई जाने वाली सरकारी योजनाओं का लाभ भी नहीं दिया जा रहा है. ऐसे लाखों लोग मुश्किलों से गुजर रहे हैं. अब शेष 19 राज्यों व केंद्रशासित प्रदेशों में एसआईआर की प्रक्रिया जारी है जहां कोई भ्रम नहीं रहना चाहिए, बल्कि एकरूपता होनी चाहिए. बिहार में चुनाव आयुक्त ने कहा था कि पहले से भरे हुए आवेदन मतदाताओं को उपलब्ध कराए जाएंगे, जिनको उन्हें फिर से दाखिल करना होगा. इसके विपरीत दिल्ली में पुराने मतदाताओं को फॉर्म 6 भरने को कहा जा रहा है जो कि नए मतदाता का नाम दर्ज करने के लिए होता है. तो क्या सभी नागरिक पहली बार मतदाता होने जा रहे हैं? पहले ऐसा होता था कि जिन लोगों ने कभी खुद को वोटर के रूप में दर्ज नहीं कराया, उन्हें अपने माता-पिता के दस्तावेज पेश करने पड़ते थे. अब पुनरीक्षण में सभी को अभिभावकों का विवरण देना पड़ रहा है. यदि कोई अनाथ है तो वह विवरण कहां से लाएगा? किसी ऐसे बुजुर्ग या 18 वर्षीय युवा को जिसके माता-पिता ने कभी मतदाता सूची में नाम दर्ज नहीं कराया, बुरे अनुभव से गुजरना पड़ रहा है. जो प्रवासी मजदूर दूसरे राज्यों में जाकर काम करते हैं उनके बच्चों के साथ यही स्थिति है. भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को अपने जन्म की तारीख याद नहीं रहती. वहां जन्म-मृत्यु के मामले दर्ज भी नहीं कराए जाते. जहां घर में प्रसव होता है, वहां अस्पताल का सर्टिफिकेट लाने का सवाल ही नहीं उठता. ऐसी हालत में लोग खुद को मतदाता कैसे साबित करें? अनपढ़ तो क्या पढ़े-लिखे लोग भी दस्तावेज संभालकर नहीं रख पाते. घर बदलते समय या बाढ़, भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदा के कारण दस्तावेज खो जाते हैं. सरकार पासपोर्ट को सिर्फ विदेश यात्रा दस्तावेज मानती है. वह आधार कार्ड व राशन कार्ड पर भी भरोसा नहीं करती. ऐसे में मतदाता सूची से नाम कट जाने के आसार बन जाते हैं. वयस्क मताधिकार का संविधान प्रदत्त अधिकार खटाई में पड़ जाता है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

चंदा चोरी से लेकर चादर चोरी आखिर ऐसी कौन-सी मजबूरी

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, विश्व गुरु कहलाने का दंभ भरने वाले हमारे नेता खुली आंखों से देख रहे हैं कि नैतिकता दफन हो चुकी है और चोरों की बन आई है. मंदिर के चंदा या चढ़ावा चोरी से लेकर रेलवे की चादरें भी चोरी होने लगी हैं. यह कितनी शर्म की बात है.'

हमने कहा, 'चोरी को 64 कलाओं में से एक माना गया है. भगवान कृष्ण को हम माखन चोर कहते हैं. बच्चे चोर-सिपाही का खेल खेलते हैं. फिल्मी हीरो गाता है- चुराके दिल मेरा गोरिया चली! राजकपूर-नरगिस की प्रसिद्ध फिल्म का नाम था- चोरी-चोरी. अंग्रेज हमारे देश से कोहिनूर हीरा चुराकर ले गए थे. आपने सुरैया का गाया हुआ पुराना फिल्मी गीत सुना होगा तेरे नैनों ने चोरी किया, मेरा छोटा सा जिया परदेसिया!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, सवाल उन लोगों की खोटी नीयत का है जो सार्वजनिक संपत्ति को अपने बाप का माल समझते हैं. वह होटल या रेस्टहाउस में ठहरने के बाद वहां का तौलिया, साबुन, टूथपेस्ट चुराकर ले जाते हैं. कुछ तो नल की टोंटियां भी नहीं छोड़ते. ट्रेन के टॉयलेट में मग जंजीर से बंधा रहता है ताकि कोई पैसेंजर उसे चुराकर न ले जाए.

अब आरटीआई या सूचना के अधिकार से जानकारी मिली है कि ट्रेनों से 1.27 करोड़ रुपये की बेटशीट या चादरें चुरा ली गईं. पूरे बेडरोल आइटम गायब हो गए जिनमें चादर के अलावा कंबल, तकिया व तौलिया भी शामिल हैं. इन चीजों को वहीं छोड़ने या वापस करने की बजाय यात्री उन्हें लेकर चंपत हो गए.'

हमने कहा, 'जहां तक चादर की बात है, वह ओढ़ने, बिछाने के काम आती है. चादर सूती या रेशमी भी हो सकती है. भागलपुरी चादरें काफी प्रसिद्ध हैं. पुराने जमाने में कहा जाता था-जितनी चादर हो उतने में ही पैर पसारो! अब लोगों ने अपनी चादर लंबी कर ली है. लोन लेकर और क्रेडिट कार्ड से अंधाधुंध खर्च करते हैं. आमदनी अठन्नी खर्चा रुपैया वाला समय आ गया है. इस तरह हमारी इकोनॉमी तरक्की करती जा रही है. सफेदपोश चोर और रिश्वतखोर की पांचों उंगलियां घी में और सिर कढ़ाही में रहता है. हरिओम शरण ने भजन गाया था मैली चादर ओढ़ के कैसे पास तुम्हारे आऊं! इसलिए लोग रेल्वे की साफसुथरी सफेद चादर चुराने लगे. अधिकांश लोग घर में सुबह उठने के बाद चादर ठीक से फोल्ड करके नहीं रखते. संत कबीरदास का काम बहुत सिस्टमेटिक था. उन्होंने कहा था- दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों कि त्यों धर दीनी चदरिया भीनी रे भीनी!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12320

- डॉ. सागर खादीवाला

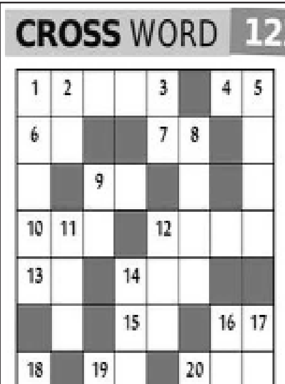

बाएं से दाएं

1. हिमालय पर्वत की एक चोटी 4. प्रलय, कयामत, झगड़ा, उपद्रव (उर्दू) 6. मदिरा 7. समान, तुल्य 9. अंधकार 10. निर्माण 12. नाव खेना, नाव की सैर 13. लथपथ 14. घर, मकान, मांद, घोंसला (सं.) 15. नीरस, फीका, जो चिकना न हो 16. अवस्था 19. किसी मंत्र, नाम या वाक्य का बार-बार किया जाने वाला उच्चारण 20. चावल से बनाया जाने वाला एक व्यंजन 21. किसी धार्मिक ग्रंथ का नियमित रूप से आरंभ से अंत तक का पाठ 22. प्रबल, अभिलाषा

ऊपर से नीचे

1. एक पेड़ जिसकी लंबी फलियों का गूदा जुलाब के लिए इस्तेमाल किया जाता है 2. गीत गाने का सुंदर ढंग, धुन, ध्यान में लीन होना 3. गुलाम, नौकर, सेवक 5. सार्वजनिक हित के लिए स्वेच्छा से श्रम का निर्माण कार्य में दान देकर सहयोग करना 8. बड़े डील डौल वाला, स्थूल शरीर वाला 9. गीला, आर्द्र, भीगा हुआ 11. लाट, बहुत ऊंचा और गोलाकार स्तंभ या इमारत (उर्दू) 12, नौ लाख का, जड़ाऊ, बहुमूल्य 14. सोच समझकर किया हुआ निर्णय, प्रकाश निदर्शन 16. मध्यस्थ, कुछ पारिश्रमिक लेकर सौदे में सहायता देने वाला व्यक्ति 17. किसी पशु या पक्षी का बच्चा 18. होश हवास, अस्तित्व, अहंकार 19. जीत, विजय 20. नदी-नाले के आरपार जाने के लिए बताया हुआ रास्ता

Solution 12319

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में वाहन का सुख मिलेगा. व्यय पर नियंत्रण रखें. शिक्षा और प्रतियोगिता में यात्रा होगी. सफलता के योग है. सामाजिक ख्याति प्राप्त होगी. वर्ष के अन्त में सिरदर्द या अनिद्रा जैसे रोगों से परेशानी होगी. व्यर्थ की भागदौड़ एवं व्यस्तता से दिमागी उलझन रहेगी. चल-अचल संपत्ति के कार्यों में व्यस्तता रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ की भागदौड़ एवं व्यस्तता दिमागी उलझन रहेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को वाहन का सुख प्राप्त होगा, व्यय पर नियंत्रण रखें. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को व्यवसाय में विवाद का सामना करना होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को अच्छे प्रभाव की प्राप्ति होगी, सामाजिक ख्याति प्राप्त होगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना हितकर रहेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियोंको सिर दर्द अनिद्रा जैसे रोगों से परेशानी होगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को व्यवसाय में विवाद का सामना करना होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक दुबला पतला लंबे कद का एकांतप्रिय लेखन और अध्ययन के क्षेत्र में रूचि रखेगा. नौकरी में उच्च पद पर पदस्थ होगा. माता का विशेष प्रेमी होगी. जन्म स्थान के निकट ही अपना भाग्योदय करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

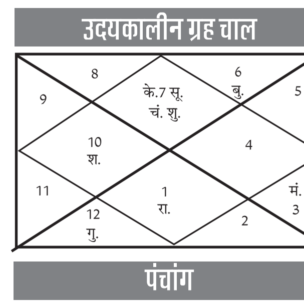

पंचांग

रा.मि. 25 संवत् 2083 आषाढ शुक्ल द्वितीया गुरूवासरे दिन 11/20, आश्लेषा नक्षत्रे रात 11/27, वज्र योगे दिन 8/7, कौलव करणे सू.उ. 5/17, सू.अ. 6/43, चन्द्रचार कर्क रात 11/27 से सिंह, पर्व- रथयात्रा, शु.रा. 4, 6, 7, 10, 11, 2 अ.रा. 5, 8, 9, 12, 1, 3 शुभांक- 6, 8, 2.

मेष- अनुभवी लोगों का साथ लाभकारी रहेगा, प्रापर्टी संबंधी कार्य बनेंगे, राजकीय क्षेत्र में सफलता प्राप्त हागी, पारिवारिक मतभेदों से बचें. समय पर लाभ प्राप्त होगा.

वृषभ- निर्धारित कार्यक्रम में बदलाव से परेशानी होगी, साझेदारी से लाभ होगा, धार्मिक एवं आर्थिक कार्य बनेगा, मन में शांति और संतोष का अनुभव होगा.

मिथुन- अटकी तरक्की मिलने का योग है, खोई हुई प्रतिष्ठा हासल करने में सफल होंगे, जमकर जायजाद के कार्यों में सफलता मिलेगी, निजी पुरूषार्थ बना रहेगा.

कर्क- रूकी योजनाओं पर खर्च की संभावना है, दौड़धूप करके निजी कार्य करवा लेंगे, व्यापार व्यवसाय को बढ़ाने का प्रयास करें, मांगलिक कार्यों पर विचार होगा.

सिंह- अधिकारियों के मेलजोल का लाभ मिलेगा, कारोबारी यात्रा सफल रहेगी, किसी कार्य में परिश्रम अधिक करना होगा, मानसिक रूप से सुख और संतोष का अनुभव होगा.

कन्या- समय पर कार्य पूरा न होने पर निराशा होगी, भाग्य के भरोसे अवसर गवां देंगे, पारिवारिक मतभेद रहेगा, यथेष्ठ सावधानी रखकर कार्य करें, संयम रखें.

तुला- मित्र मण्डली के सहयोग से काम में आसानी होगी, अपनों का व्यवहार दुखी करेगा. वाहन चलाते समय यथेष्ठ सतर्कता वांछनीय. यश प्रतिष्ठा बनी रहेगी.

वृश्चिक- विवादित मामले आपकी पहल से हल हो सकते हैं, अनुभवी लोगों से लाभ होगा, साहस पराक्रम में वृद्धि होगी, मान सम्मान प्राप्त होगा.

धनु- व्यापारिक लेनदेन के पुराने मामले सुलझने से मन में संतोष रहेगा, कौटूम्बिक मामलों में सावधानी रखें, संतान की चिंता रह सकती हैं, कम लाभ में भी संतोष रहेगा.

मकर- भाग्योदय के अवसर मिलेंगे, सहयोगियों से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं, मन में संतोष रहेगा, परिश्रम की अधिकता रहेगी, मान सम्मान प्राप्त होगा.

कुम्भ- कार्यस्थल पर अपमान का भय है, तनाव की स्थिति में फैसला नहीं ले पायेंगे. राजकीय क्षेत्र में यश और प्रतिष्ठा बढ़ेगी. अच्छे अवसरों का लाभ मिलेगा.

मीन- जोखिम के कार्यों से दूर रहें, व्यापारिक साझेदारी लाभदायी हो सकती है, अतिथि आगमन होगा, अनसोचे कार्यों में व्यस्तता रहेगी, झूठ आरोपों से बचें.

व्यापार भविष्य

आषाढ शुक्ल द्वितीया को आश्लेषा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड़, नमक, चांवल, के भाव में तेजी का रूख रहेगा. धनियां, जीरा, आदि के भाव में समता रहेगी. सोना चांदी में तेजी का रूख रहेगा. लोहा, के भाव में मंदी होगी. भाग्यांक 9455 है.

SUDOKU 7452

	9				6			
4	7				8	3		9
		8	7	3		1	2	
	8	9		5	1		7	6
5	1		8	7		4	9	
	2	4		6	5	7		
7		1	3				5	8
			1				4	

• प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. • पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. • पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7451

1	9	3	7	5	4	2	6	8
8	4	2	1	6	3	9	7	5
5	7	6	8	2	9	3	1	4
4	1	5	6	3	2	8	9	7
7	2	9	4	8	1	6	5	3
3	6	8	5	9	7	1	4	2
2	5	1	9	4	8	7	3	6
9	8	4	3	7	6	5	2	1
6	3	7	2	1	5	4	8	9